

अ. नं. २५२

संस्कृत वस्तुसंग्रह

हिंदी

व

मराठी



१९०१ स. २०६

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ①

॥ काननमुद्रागुरुके बानी सांती कोरन
॥ कंथा ॥ समता बभूत चक्राय फिरते कंप
॥ अहमारा उलूखा ॥ १ ॥ ग्यानी समजो बे ॥
॥ भोगु न त्यागी त्यागु न भोगी रे सोहम
॥ हुं जागी ॥ १२ ॥ ग्यान जटा ऊट टूट कर बा
॥ ध्या सिर कूं भूषण सारा ॥ आलेख जो
॥ गी अबोध ग्यानी भेख निगु न मेरा ॥ २१ ॥
॥ अपुना प्रबोध भाई समजो पाउ डाबे मे
॥ रा ॥ शुधु नी बनाउष डिपु की तारहे ले
॥ समसंन्यारा ॥ ३ ॥ बिंदियर लून को पि
॥ नप करी बिचार निर्भय बोही ॥ क्षमा सो
॥ ली बिराग पत्तर शीगी निरास सोई ॥
॥ ४ ॥ आसन बिरहित आसन हमारा भू
॥ दरा बिरहित मुदरा ॥ नामा बिरहित
॥ नाम ग साई ॥ अत हे हम कूं रुद्रा ॥ ५ ॥
॥ ग्यानी समजो बे ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥
॥ भ्रष्टा जगवान की सेस सेवा के सेस
॥ के सीर पर ध्यान धारे ॥ देदय कमल
॥ कूं सोध कर अल्प कूं भेद कर कामदल
॥ जीत कर के धि मारे ॥ पुशासन के पवन
॥ पर चल गगन महल मोषदन सारे ॥
॥ कहत कबीर काइ संत जन जोहरी क
॥ रम करे खपुर मेख मारे ॥ १४ ॥ १५ ॥
॥ तेरे घट मो बोल ताको न साजे ॥ उस
॥ बोलने कूं पहचान बारे ॥ लुंथा काहां
॥ आया काहां अस न्याय कांहां कलु

जानबारे ॥ च्यारों देसकानुरबरख
॥ आताये कबिंदकी ज्याती जगतसा
॥ रे ॥ तेरा घर धारा पवन अस्वारे द
॥ मैदान मो प्रान प्यारे ॥ दीना चारचौ
॥ गान मोरे वल्ले तथे बाजु आयिलुगी
॥ आरसें ॥ ज्याहां दासकक्षीरनेनि
॥ आज किई ज्यांकू जानते हे जगतसा
॥ रे ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥
॥ बंदे मे हर बिना मे हर बानकी सरबेस
॥ पाये ॥ मेहरका कुल्लोक फनीबीमे
॥ हरकी ॥ मेहरका मुतगाईसकमुर
॥ कुलगायये ॥ मेहरकाया मंताबीमे
॥ हरका ॥ मेहरकी आसा तमाशाबीमे
॥ हरका ॥ मेहरके महलमे मेहरबान
॥ कुं मनाइये ॥ कहत कबीर बंदे अजु
॥ जकी खबर करक्याले आयाक्याल
॥ ज्यायेगा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥
॥ गगनगुंफामो अलेख अकेला ॥ नाही
॥ गुरू नाहीविला ॥ ११ ॥ अगम अउ पारति
॥ न्हा गुन नही नही पंचनकोमेला ॥ ११ ॥
॥ बातनुको जीय पावत नाही गुरूकोबि
॥ चनसलहिला ॥ १२ ॥ मानपुरी प्रभू अंत
॥ रूजामी सब भेकन मोखला ॥ १३ ॥ ११ ॥
॥ गुंरुटो निरंजन निरापे छेवला ॥ सह
॥ जेबुरीमे अजु भवमेला ॥ १४ ॥ मनसा

॥ चरवण अस अहारा ॥ अगमनी
 ॥ गमबीचपंथहमारा ॥ २॥ बेसत
 ॥ तरुबरकीछायानंगुफामो
 ॥ सहजसेलुपाया ॥ ३॥ निविकि
 ॥ लप कंथ अलख अधारीनिर
 ॥ तीसरतीनेरहणिहमारी ॥ ३॥
 ॥ दासकबीराजगजगजीवे ॥
 ॥ रसनारामरसायनपीवे ॥ ४॥

॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥
 ॥ अश्वगजदासदासी ॥ तनुमन अर्पिले श्रीरामा
 ॥ सी ॥ जनक निघाला स्वभोर सी ॥ दशरथासीबो
 ॥ लवीत ॥ १ ॥ ऐसे देवोनिगरदुषी ॥ वगेषा
 ॥ तला बटिकाश्रमासी ॥ देवानिधुगुकुळदिक
 ॥ कासि ॥ तणे बेसलासकाय आत ॥ २ ॥ तुंदिज
 ॥ कुळामाजिमहारजविरा ॥ आणित्यारामेअंगि
 ॥ लंतुसेधनुषा ॥ तुजथारआलं अपेरा ॥ तेणेशरा
 ॥ वाटविले ॥ ३ ॥ बो लभगुकुळदिवाकर ॥ आमुचे
 ॥ अवतारकृत्यजालेसमय ॥ बोलेपंर जोडुवपुत्र ॥
 ॥ तुजअणुमात्रनेधिकानये ॥ ४ ॥ जमदग्निनेको
 ॥ धटाकिला ॥ तोतलाकमत्कपावला ॥ तेसीचतुज
 ॥ आलीवेळा ॥ दशरथीतुजलानसोडी ॥ ५ ॥ शिवे
 ॥ तुजदिधलाहोतापिजण ॥ तेणधतलेसत्रियानेप्रा
 ॥ ७ ॥ ऐसेबोरताब्रह्मनदन ॥ जामदग्नभाभला ॥ ६ ॥
 ॥ कीमगेइहोतानिजेला ॥ तोपदघातहाणोनिजागा
 ॥ केला ॥ किवानसिहप्रगटला ॥ स्तभाबाहीरदुसरेने ॥
 ॥ ७ ॥ की घेतसिंपिलावैशानर ॥ किवानासिकोचरीता
 ॥ डिलाव्याघ्र ॥ कीबळेविरवराकिलाफणिवर ॥ कीम
 ॥ हारुद्रभोभविला ॥ ८ ॥ विष्णुचापचढविले ॥ नारद
 ॥ आर्गवदोपेनिघाले ॥ श्रीरामासिआडेवेआले ॥ मु
 ॥ नोवेगेकरुनियो ॥ ९ ॥ सावळापुरुषदेदिप्यमान ॥ वि
 ॥ १० ॥ कनेचसहास्यवदन ॥ जलमुकुटमस्तकींपूर्व ॥
 ॥ यज्ञोपवीतजळकतसे ॥ १० ॥ कासेविराजेपीतो
 ॥ वर ॥ ११ ॥ उतरी वरुपपरमआरकदिस
 ॥ ११ ॥ कीसुदय्यरउगवला ॥ ११ ॥

॥ धनुष्या बाण ललुन ॥ मां ३३ भागक
 ॥ लावे पुन ॥ सो का पप्रेदक संपूर्ण ॥ कं पायमा
 ॥ न जी हले ॥ १२ ॥ ती न सप्त के जेण करुनि ॥ नि
 ॥ वरु रके ली सकळ अवनी य अवघे राजे टाकि
 ॥ ले आटो नि ॥ किं वा प्रक याग्नि दु सरा ॥ १३ ॥
 ॥ ए साम हारा जजामुद न ॥ क्षत्री जल दजाल प्र
 ॥ भं जन ॥ तो हा कुठार पाणी भृगु नंदन ॥ वीर का
 ॥ ननु निर्मळ के लं ॥ १४ ॥ मां ३३ दे स्वता महा व्याघ्र ॥
 ॥ भया भीत होती अजाचे भार ॥ जे सादे स्वता रेणु
 ॥ का पुत्र ॥ शस्त्रंग काली बहतांची ॥ १५ ॥ गज ब
 ॥ जिला द क भार समस्त ॥ मिथुळेश्वर होय भ
 ॥ या भीत ॥ स्त्रियां माजिलु पालो दशरथ ॥ लण
 ॥ अनर्थ मांडला ॥ १६ ॥ तो वैराग्य गजा रुठर घु
 ॥ नाथ ॥ बरि निर्धर च वर जाल शे भव ॥ पुढे बे स
 ॥ ला अनुभव महंत ॥ तिवे कां कुश घेजे ॥ १७ ॥
 ॥ ज्ञाना चें धज शक कति भ चपळे ऐसते त
 ॥ कपती ॥ विज्ञान मकर वि रदे निश्चिती ॥ पु
 ॥ ठे चालती स्नान दे ॥ १८ ॥ निरुती व्याप ताका ॥
 ॥ पारु विती मुमुक्षु साधका ॥ राम नाम चिन्हा
 ॥ कित देखा ॥ दया वात प्र उकति ॥ १९ ॥ मन प
 ॥ वनाचे अश्व भार चालिले ॥ अनुसंधान वाग्
 ॥ दोर लाविले ॥ विरक्त पारवे रे सांदि के ॥
 ॥ अनुभवा वे जोडिले मुक्त घोष ॥ २० ॥ विद
 ॥ लें जडित दिव्य रथ ॥ चारी वाची चक्रे घड्य
 ॥ डित ॥ घोडे र्जपिले चारी पुरुषार्थ ॥ सार
 ॥ भीतेथे आनंद पै ॥ २१ ॥ नाम शस्त्रे घे उनि
 ॥ हा ती ॥ सो हं श हं वी रगर्जती ॥ शणे प्रपंच
 ॥ देळ वि धं सिती ॥ नाटो पती कृ किकाळा ॥ २२ ॥
 ॥ रामा वरी अहय कृत्र ॥ स्वानंदा चं मित्र पत्र पते
 ॥ नम्य चा नर पुरिकर ॥ प्रेम कुंचे वरि टाळिती ॥
 ॥ २३ ॥ हडप करी शुद्ध सत्व ॥ निज भक्ति व्या वि
 ॥ डादित ॥ अहं भाव सब कतेथं ॥ राघवा पुढे धा
 ॥ वती ॥ २४ ॥ अनुताप लघु चिर घडवि ॥ मायी कु धुळी
 ॥ वारु मित लणी ॥ तर्क पी कपा प्र धसनि मुरव विलो
 ॥ कित रामाचे ॥ २५ ॥ सो मित्र भरत शत्रु घु वध ॥
 ॥ हे सद विद आनंद ॥ स्व रूप प्रा मिचे कुं नर अंशे

॥३॥तयावरीआरूढलेते॥२६॥हिरेजोडिलेदां
॥तोदाती॥वरिमुक्तजाकियाभिरवति॥कामको
॥धाचेतसुमोडिती॥सहजजातानिजपंथो॥२७॥आ
॥शातृष्णाकल्पनाभ्रांती॥वाटजातागुल्मंछेदिती॥
॥सुडाहाणनिबादांती॥केडकोडितिविषयाचो॥२८॥
॥सुदमलसरदभपवत॥रथचक्रालकीपीठहोत॥कु
॥मतेपाषाणसुमस्त॥रगडनिजातीघडघडां॥२९॥
॥धैर्यतुरंगअलाटचपळ॥भायारगणीतळपती
॥सबळ॥वरिरामउपासकनिर्मळ॥कळिकाळा
॥तेनगाणिती॥३०॥ऐसेनिभाररधुनंदन॥जोकौंस
॥ल्याददयमादसरत्न॥निजभारदेरिवलाथोकु
॥न॥गजारोहणपुढेआला॥३१॥बेतारकरवि
॥पुत्र॥केरजोडनिभुमस्कार॥तेवतोक्षत्रियांतक
महावीर॥वरिरेजीवनेचकरीतया॥३२॥किचि
॥तेनिबोलाफरशधर॥बोलपुंकजद्रिवपुत्र॥तुज
॥देखताराघवेद॥गजारवालउत्तरना॥३३॥तुवी
॥रआणिविशेषआलण॥तुजकाहीनेदीमान॥
॥यथार्थलणोनुभुगुनंदन॥शिबीबाणचापासी॥
॥३४॥रघुपतीसलणभुगुनंदन॥तुसत्रीलणवि
॥सीनिवणि॥तादिकाखीवधुन॥आश्रमकला
॥साचपे॥३५॥रुद्रारोमिसरुद्रबाळ॥योगीयत्क
॥अशक्तकेबळ॥परवातिकरुद्रधपांगुळ॥वृद्धब्रा
॥ह्मणगायगुरु॥३६॥जिउवधुमातापिता॥जोत्रा
॥रुद्राकूनहायपुढता॥इतकियावरीशस्त्रउच
॥लिता॥महादेवीबालिलीहो॥३७॥लणोनिंतु
॥अधर्मवीर॥वरिस्त्रीहिल्याकिलीसाचार॥यावरी
॥जानकीददयभ्रमर॥कायबोलतीजाहला॥३८॥
॥तादिकानकुमाश्रीमाता॥तुवांमात्रुवधकेलजाण
॥३९॥तंडुचवणब्राह्मण॥तुजशस्त्रधरावथाकायका
॥रण॥सोडनेअनुभानतपावरण॥राजहिंसाकलि
॥या॥४०॥तुआलणपरमपवित्र॥तुजवरीअस्त्रीधरा
॥वेशस्त्री॥हेकर्मअत्यासिअपवित्र॥अविपुत्रजाण
॥पा॥४१॥ऐसेलेकताफरशधर॥सोडीतलाकनि
॥वीणशर॥इकेडकेडजसिबाणरधुविश॥लावीपती
॥सोडीना॥४२॥कल्यातचपळसमान॥येतीभागवि
॥रामाचेबाण॥तेदृष्टीनेपाहतीसिताकुडिअनु॥जो
॥तीवितकनक्षपाधुं॥४३॥जेसासुगटताचंडपवन
॥दीपिकाजोतीविमान॥कींशिवदृष्टीपुढेमदन॥
॥नलगताशुणभुस्महाया॥४४॥कीअगटतानिवा
॥णज्ञान॥मदमलसरजातीवितकन॥कीअडुतवध
॥ताघन॥बोणवाविमानसायपा॥४५॥

॥ काय वों वाळूं मी आतां काय कवण ॥
 ॥ सदोदित आवघें स्वरूप आपण ॥ १ ॥
 ॥ देव भक्त पण जेथें भास भसेना ॥ वण ॥
 ॥ वण रूप नो मजें जो दिसेना ॥ २ ॥ ज्या
 ॥ ते जें चंद्र सूर्य दिमी मंदती ॥ तयति जा
 ॥ वों वाळूं मी कोणती ज्योती ॥ ३ ॥ तये ज्यो
 ॥ तिस जेतला उनि वों वाळूं गेलें ॥ कपूरा
 ॥ चेपरी ल्पण मल्लारी जाली ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ वों वाळूं गेलियें सारंग धरु ॥ जिकडे पा
 ॥ हेतिकडे चतुर्भुज परिवारु ॥ १ ॥ ला
 ॥ जिल्यें ममा आतां कवण वों वाळूं ॥
 ॥ अंतर्बाल्य पाहें चतुर्भुज गोपाकु ॥ २ ॥ ॥
 ॥ परतुनि आली ये बाई सखिया मासारी ॥
 ॥ त्याही पाहें तें वचतुर्भुज मुरारी ॥ ३ ॥
 ॥ श्री वत्स लाल नंद वी वळ स्वण ॥ विष्णू
 ॥ हासना मयानें दाविली स्वण ॥ ४ ॥ ॥
 ॥ वों वाळूं गेली ये सद्गुरु रामा ॥ रामरूपी
 ॥ दुजे पण नदी से आला ॥ १ ॥ सरवर वान
 ॥ र राम सकळ ॥ दैत्य निशा चरते ही रामके
 ॥ वळ ॥ २ ॥ त्रैलोक्या मासारी रामरूपचि
 ॥ येक ॥ सद्गुरु रूपे केशवराजी आनंद
 ॥ देख ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 ॥ मायेने मारीले मावसीये दवडीले ॥
 ॥ तेका कीपासिं आले बेसावया ॥ १ ॥
 ॥ काकी मुखदावा ३ बाईयानो ॥ २ ॥ ॥
 ॥ काकी येचें मुख नवनाथ्या कावळें ॥ का
 ॥ कीये रक्षीलें गोरक्षीतें ॥ ३ ॥ विष्णुदास
 ॥ नाम्या काकी जेवोळली ॥ तें सत्राकी
 ॥ दीधळी दुभावया ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ वासुदेव ॥

- ॥ गोविंदारामाहो ॥ गोपाळारामाजी ॥ १॥
॥ सद्गुरुदेवाचे अलिपायवदिलेजी ॥ स
॥ बहीदृश्यजालनिःशेषछेदिलेजी ॥ आ
॥ लक्षलक्षबाणेसंधानभेदिलेजी ॥ भव
॥ भयसंशयाचेते दृष्टछेदिलेजी ॥ १॥
॥ संतयासज्जनाचीहेसभाबैसलीजी ॥
॥ दर्शनें आशाबेडीतकोळतूटलीजी ॥
॥ जीवकीं शीवनेणो अरिश्रांतिफीटली
॥ जी ॥ भाविकासाधकाचीगुरुमायभे
॥ टलीजी ॥ २॥ चिद्वनादितदेवातुसंना
॥ मचांगलेजी ॥ गाईनटाळघोळेभा
॥ नसरंगलेजी ॥ सांवळे रूपडेसें अ
॥ संध्यानलागलेजी ॥ उल्थवेंसूरवते
॥ ह्यास्वानंदभोगिलेजी ॥ ३॥ ॥ १॥ ॥ १॥
॥ सरवयारामाविश्रांतितुसियेनामी ॥ अ
॥ णउनिमजलानेत्वरविजसुखधामी ॥
॥ १॥ ॥ अवचुटसुकुतेनदेहाजालीभेटी ॥
॥ पशुसुतजायाधुनधाचीप्रीतीमोटी ॥
॥ माझीं अणुनीम्याकवळुनिधरिलीपो
॥ टी ॥ यांच्यासंगेभोगिलीदुःखकोटी ॥ १॥
॥ सांडुनिस्वहिताहिंडलोदीशादाही ॥ शव
॥ बतेजाहालोमागुताकवतुकपाहे ॥ परि
॥ स्वजनहेनेदेईकवडीतेही ॥ परिहेआशा
॥ पापिणीसोडितनाही ॥ लाजतनाही ॥ २॥
॥ जंबवरिदढतातंबुरीयांचीप्रीती ॥ जर्ज
॥ रहोतांअवधीहीनिंदकहोती ॥ यांचीदुः
॥ खेवतुजलामीसांगोकीती ॥ अणउनिम
॥ तोश्रीधरकाकूलती ॥ ३॥ ॥ ॥ १॥ ॥
॥ अमताच्याआळांलाबीलानिंबारा ॥
॥ कवणत्यागवाराबुजाविले ॥ १॥ ॥ सो
॥ न्याचेतीवईबैसरीलीदासी ॥ काय

(5)

॥ उपमातीसी वरमायेची ॥ २ ॥ माकड
॥ शृंगारुनी बैसवीलें पालरवी ॥ इख
॥ चीलसे रंवी आपुलागुण ॥ ३ ॥ तुका
॥ लणे कीती सांगावे सोडासी ॥ नवसा
॥ कुमिरासी आपुली हो ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥
॥ देह हे पंढरी प्राण पुंडलीक ॥ सत्रा
॥ वीस नख चंद्रभागा ॥ १ ॥ परतो
॥ विआत्मा पंढरी चानाथ ॥ जेथें पाहा
॥ तेथे ठसावला ॥ २ ॥ शांती क्षमा दया
॥ राही ररवु माई ॥ दोहीं बाहिदोनी
॥ विराजती ॥ ३ ॥ विवक वैराग्यग
॥ रुड हनुमंत ॥ ससुरवतिष्ठतस
॥ र्वकाळ ॥ ४ ॥ तुकालणे नित्यं
॥ दुर्गभेदी ॥ जाली असतुटी
॥ संसाराची ॥ ५ ॥ ॥ ॥ २५ ॥
॥ पुनरपि जन्माये इ नार ॥ ६ ॥ ना
॥ मी नरजे विनुरवहोती ॥ त्यांचे मु
॥ रवमी पादि नार ॥ ७ ॥ कामक्रोध
॥ मदमत्सर विनी ॥ त्यांतें शरण
॥ मी जाइ नार ॥ ८ ॥ कृष्णदास प्रभु अ
॥ विनाश निरंतर ॥ त्या विण आनि
॥ कागाइ नार ॥ ९ ॥ ॥ ॥ २६ ॥

॥ श्लोक केशव स्वामी ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ सर्व काळ भज
॥ ती गुरु माथा ॥ त्या सि नम्र करि शंक
॥ र माथा ॥ पाद पांसु अति वंदित धाता ॥
॥ वेद वणि कि कथां भृत गाथा ॥ १ ॥ सर्व का
॥ लज पुता हरि नामा ॥ सर्व काळ फळ ल
॥ हरि अंभा ॥ सर्व काळ स्वरुपी हरि पाहो ॥
॥ सर्व काळ हरि होउ निराहो ॥ २ ॥ सर्व का
॥ लर मतां हरि रंगी ॥ रंग मूर्ति भर लाह
॥ रिरंगी ॥ अंग भेद सर ला हरि संगी ॥
॥ संग भाग हरि लाम ति भंगी ॥ ३ ॥ कर्म
॥ पात्र हरु नी स्थिर होती ॥ शास्त्र गर्भ ध
॥ रुनी सुख घेती ॥ आत्म संग करु नी त
॥ रलेते ॥ पूर्ण संतुद दई भर लेते ॥ ४ ॥
॥ कळो निबोले निगळे निडोले ॥ तो भेट
॥ तां दोष जळो निगळे ॥ असे तसे त्या सि
॥ कसे त्मणा वे ॥ आत्म चितो पूर्ण असे
॥ स्वभावे ॥ ५ ॥ धनु सुत पशु जाया या
॥ सि देऊ नि काया ॥ परम सु रत भावे सि
॥ ल्ध से वा कराया ॥ मरण समिप आले स
॥ र्वसो भाग्य गेले ॥ हृदय कमळ वासी
॥ ब्रह्म तेंदू रेठेले ॥ ६ ॥ गुरु रुप दर जतू से
॥ वंदिले निश्चये सी ॥ हरि लि त्रि विध मा
॥ या त्या गिले हूँ त दोषी ॥ त्रिभुवन जनका
॥ ची मंदिरा मूर्ति आली ॥ सर लि सकळ
॥ चिंता इंदिरा दासि जाली ॥ ७ ॥ धरु न
॥ को लटि की मनि वासना ॥ त्य जि मृषा
॥ अवधी भव कल्पना ॥ मुनि वरे सकळी
॥ शि रि वाडले ॥ स्मरत या हरि ची निज
॥ पाडले ॥ ८ ॥

(6)

॥ वरिवरीकरि शी कथनें कित्ती ॥ भवन
॥ दीतरणे धरिंते रित्ती ॥ रतिपती हरुनी
॥ बरव्यारिती ॥ करिंरमापतीची पुदसंग
॥ ती ॥ ९ ॥ घडिघडी भ्रमतां किति वाउ
॥ गे ॥ भ्रवमुके श्रमतां तुलिवउगे ॥
॥ स्फुरनिधी बरवा हरि आठवा ॥ मग
॥ लनूषसतां तुलिनोठवा ॥ १० ॥
॥ मुकिहुनी हरुनी भवकामना ॥ गुरु
॥ भ्रजाकेरुनी स्थिरयामना ॥ स्फुरवल
॥ इधरिंचा घरिंसांपेडु ॥ नकळतां ठ
॥ कळेजन बापेडु ॥ ११ ॥ येमनेम करि
॥ तां बरवेहे ॥ रामचंद्र हृदई धरितां
॥ हो ॥ तुरिभ्रवाण विहेतरलती ॥ सं
॥ तसर्वतुमचुगुणधुती ॥ १२ ॥ सदा
॥ आठवीतां रतीनाथपीता ॥ सदा
॥ सेवितं शान्तरसां शगाथा ॥ स
॥ दांसत्यदा भागितां तसुहोतां ॥
॥ सदां वितितां तत्वहाती चंदतां ॥
॥ १३ ॥ तोडुनिमाया गुणसंगभावा ॥
॥ लात्काळहामो ह्यजगासिद्यावा ॥
॥ ऐसामनी आदरराघवाला ॥ या
॥ कारणे सद्गुरु मूर्तिजाला ॥ १४ ॥
॥ विज्ञानमुद्रो बरवी जयाची ॥ त्रिकाळ
॥ हे प्राप्तिकरी स्फुरवाची ॥ तो सद्गुरु
॥ अद्वयसृष्टिकर्ता ॥ तूं आठवीशीं ति
॥ सुमाधिभर्ता ॥ १५ ॥ पंचाक्षरी तो गु
॥ रुदवराण ॥ झाडी स्वयेपंचभुतां सि
॥ जाण ॥ ठेऊनिया तारकहात माथां ॥
॥ हाकाटिला पूर्वसंघ आतां ॥ १६ ॥

॥ चमत्कारभासेमृषारूपजथेगमुटं लु
 ॥ थलींसत्यमानूनितेथे ॥ स्वरवात्माह
 ॥ रीसिधनेणोनिजाणा ॥ वृथापीडती
 ॥ वलीदुःखनाना ॥ १७ ॥ गुरुनायके
 ॥ ठेविलाहातमाथा ॥ नयेसांगतागुत्थ
 ॥ तंमायेआतां ॥ निजानंदतोप्रत्यया
 ॥ पूर्णआला ॥ स्वयेआमुचालाभ्रआ
 ॥ लासिजाला ॥ १८ ॥ मलादेवतोकोण
 ॥ कामासिआला ॥ गुरुच्यामुरवदेव
 ॥ तोवश्यजाला ॥ गुरुत्तातमाशागुरु
 ॥ नाथमासा ॥ गुरुसायरादेवदेवाधिराजा ॥
 ॥ १९ ॥ असदेहतेह्मातुसंरूपपाहे ॥ नसेद
 ॥ हतेह्मातुसंरूपपाहे ॥ नसेभिन्नआली
 ॥ तरीतूजपाहे ॥ असेसर्वदारेतुलापूर्ण
 ॥ पाहे ॥ २० ॥ अज्ञाकोणआतासमराकोण
 ॥ आता ॥ असातागुरुदेविलापाणिमाथा ॥
 ॥ मलाभेदनासेमलामुख्यध्यातां ॥ तही
 ॥ प्रेमदोरेतुसुगुणगतां ॥ २१ ॥ ककेना
 ॥ हरीकायतीहीकरावे ॥ ककेनातिहीसु
 ॥ दुरुत्तापुसावे ॥ २२ ॥ ककेव्याहरीकायति
 ॥ हीकरावे ॥ २३ ॥ ककेजातिहीतत्करेवंपैवं
 ॥ सावे ॥ २४ ॥ गुरुभेटलातोगुरुभक्तिमा
 ॥ डी ॥ गुरुभेटलातोगुरुभक्तिसाडी ॥ गु
 ॥ रुरुभेटलात्यागुरुविष्यनाही ॥ गुरु
 ॥ भेटलातोगुरुपूर्णपाही ॥ २५ ॥ गुरुभे
 ॥ टलातोगुरुनित्यपाहे ॥ गुरुभेटलातो
 ॥ गुरुत्तेनपाहे ॥ गुरुभेटलातोगुरुपू
 ॥ र्णआला ॥ गुरुभेटलारेगुरुकोणत्या
 ॥ ला ॥ २६ ॥ व्यामोहज्याव्यावचनेगळा
 ॥ ला ॥ संदेहज्याव्यावचनेपळाला ॥ सं
 ॥ सारज्याव्यावचनेजळाला ॥ आतांक
 ॥ स्वामीविसरोंतयाला ॥ २७ ॥ मायाज
 ॥ याव्यावचनेसरेहे ॥ कायाजयाव्यावच

- ॥ नेविरेहो ॥ प्रपंच्याच्या वचनें नुरेहो ॥ तो
 ॥ बापके सामनिषीसरेहो ॥ २६ ॥ काराळ
 ॥ बाणाजपसीलकाय ॥ जपसीलआ
 ॥ त्मा बहुदूरिआह ॥ आहतयार्चनिजरूप
 ॥ पाहें ॥ पाहोनि तेथें मंगमग्नराहें ॥ २७ ॥
 ॥ जिवावेगळा देवकोठं विनाही ॥ स्वयेजी
 ॥ वतो देवदेवादिपाही ॥ असें बाणलें त्या
 ॥ नसे जीवकांही ॥ जिवातीत तो तो चितो पूर्ण
 ॥ ठाई ॥ २८ ॥ अपूरा चितो पूर्ण जाला पुरारे ॥
 ॥ जधीं भेटला सद्गुरू तो पुरारे ॥ पुरा भेटल्या
 ॥ कोणना हे पुरारे ॥ असें जाणतां तो चि
 ॥ आह पुरारे ॥ २९ ॥ कपांटी गिरीकंदरीका
 ॥ वसावे ॥ वनी ऊर्ध्वे नागवे का वसावे ॥
 ॥ जनी निर्जनी तत्त्वनां देस भावे ॥ कळेना
 ॥ तिहीं सद्गुरूला पुसावे ॥ ३० ॥ कळे अर्थ
 ॥ त्यापै धरंदास आत्मी ॥ कळे अर्थ त्या
 ॥ चीधरंकास आत्मी ॥ कळे अर्थ त्याची
 ॥ कंठ आस आत्मी ॥ कळे अर्थ त्याची ध
 ॥ रं आस आत्मी ॥ कळे अर्थ तो पूर्ण
 ॥ आत्मासि स्वामी ॥ ३१ ॥ ज्या कारणें
 ॥ सेविजे सीत उष्ण ॥ ज्या कारणें सां
 ॥ दिजे सर्व तृष्ण ॥ ज्या कारणें सेविजे
 ॥ त्या वितृष्ण ॥ स्मरारे त्या आजिगे
 ॥ पालकृष्ण ॥ ३२ ॥ ज्या कारणें संतति
 ॥ झामजाले ॥ ज्या कारणें भक्तध्यानी
 ॥ निमाले ॥ ज्या कारणें मुक्तनिर्मुक्त
 ॥ होती ॥ स्मरा आजिते कृष्णगोपाल
 ॥ चिंती ॥ ३३ ॥ ज्या वितितां नावे उ पुत्र
 ॥ जाया ॥ ज्या धंडितां हे विरे सर्व माया ॥
 ॥ ज्या लक्षितां नाठवे मुख्याकाया ॥
 ॥ स्मरा आजित्या कृष्णगोपालराया ॥
 ॥ ३४ ॥ माहासाविळा तो विस्मुख्यापांही ॥

॥ नसेसोंबळें वोंबळें ज्यासिकांहीं ॥ ३५ ॥
 ॥ संसोंबळे ज्याचेर पूर्ण हाता ॥ तयाचे
 ॥ शिरी तंधरी पाय आतां ॥ ३५ ॥ स्मरा
 ॥ रे स्मरा तो विठो ज्ञान दानी ॥ स्मरारे
 ॥ स्मरा तो विठो बोध पाणी ॥ स्मरारे
 ॥ स्मरा तो विठो स्वात्मखाणी ॥ स्मरा
 ॥ रे स्मरा तो विठो नीज वाणी ॥ ३६ ॥ गुरु
 ॥ भक्तिने जो महामत्त पाहीं ॥ तेर पूर्ण
 ॥ तो या महामोहो हीं ॥ तेर तो मेरे येथें
 ॥ संदेह नाहीं ॥ मरे त्या नसे सर्वथा नाश
 ॥ कांही ॥ ३७ ॥ जह्नु हेत नूदंडिली दुर्ज
 ॥ नी हो ॥ तही योगिया दंडुकी नामनी
 ॥ हो ॥ दिसे बर्तता दैवयोगे जनी हो ॥ ज
 ॥ नाती त तो राहिला विदुनी हो ॥ ३८ ॥
 ॥ निराळें असे मंत्रयं ॥ हुनी जें ॥ निराळें
 ॥ बहु तीर्थक्षेत्रा हुनी जें ॥ निराळें असे देश
 ॥ काळा हुनी जें ॥ दिसे मद्रुक्त भक्तिने लो
 ॥ चनी जें ॥ ३९ ॥ क्रिया जाळ जंजाळ सां
 ॥ ड निपाहीं ॥ जिही वासके लासदासंत
 ॥ पीई ॥ गुणातीत जाले सरवं मग्न ठाई ॥
 ॥ जंगी धंडितां थोर त्यां हुनि नाहीं ॥ ४० ॥
 ॥ अपेक्षातया च्या मनी अल्प नाहीं ॥ न
 ॥ सजेद संकल्प हा ज्यासिकांहीं ॥ महारा
 ॥ जते योगियां माजि पाहीं ॥ मनात सदी
 ॥ तूं सदा मग्न राहीं ॥ ४१ ॥ किती व्यर्थ
 ॥ कांता मनी ध्याल आतां ॥ आकांता
 ॥ सिर मूळ कारी आकांता ॥ प्रज्ञातासि
 ॥ हेक्षे मभवी काममाता ॥ इतें साडितां
 ॥ तो दिसे सौर व्यदाता ॥ ४२ ॥ सरवा
 ॥ लागि कां व्यर्थ काशी सजासी ॥

(8)

॥ सुखा लांगिकां हेग सिआरं प्य
॥ वासी ॥ तुझे सौरव्य बापा असेत
॥ जपासी ॥ विचारं तुझांतू चिरसो
॥ ख्यराशी ॥ ४३ ॥ गुरुभक्तिने मोह
॥ सिंधू तरेना ॥ स्वबोधे मृषासंग
॥ ज्याचा सुरेना ॥ महत्सौरव्य ज्या
॥ च्यानिजांगी भरेना ॥ श्रुतीबोल
॥ तीशिघ्रकांतो मरेना ॥ ४४ ॥ धुरी
॥ नाकदासंग साधूजनाचा ॥ करी
॥ नासदादंडबोधे मनाचा ॥ माहा
॥ मूढतो नष्टपाषांडवादी ॥ मरेना
॥ मुळीसत्यमानी उपाधी ॥ ४५ ॥
॥ विरनाकदा वृत्तिबोधे ज्याची ॥ क
॥ रीनामुखे सातिमाया णवाची ॥
॥ लयापोमराभटिकंची शिवाची ॥
॥ वेदयापरी भारती केशवाची ॥ ४६ ॥
॥ विवेकानुकें मोहजाकी नजाकी ॥
॥ नरुवाचीच बोधी बरी नित्यराकी ॥
॥ नभागीचिदानंदहासर्वकाकी ॥
॥ सदाआदकदुःखत्याच्या कपाकी ॥
॥ ४७ ॥ विवेकें अहंभावज्याचा गळेना ॥
॥ जनीमुक्तसाधुअसंज्याकळेना ॥
॥ हरीअंतरीसर्वदोआकळेना ॥ तथा
॥ पोमरा मोक्षवस्त्रफळेना ॥ ४८ ॥ क
॥ डाडीतवेराग्येदहीअसना ॥ दया
॥ सिंधुसंपूर्णचित्तीवसना ॥ विवेकें मृ
॥ षाफेदहानीरसेना ॥ घनानंदतारा

॥ मङ्गलं दिसेना ॥ ४९ ॥ तत्त्वार्थहासत्त्व
 ॥ गुणविकास ॥ निःशेषतेण भवदः खना
 ॥ स ॥ भेट सरवाराम सबाद्य पा ही ॥ कवी
 ॥ ल्पणे पारसरवासिना ही ॥ ५० ॥ गुरुभ
 ॥ क्ति चाला भजो दे जयासी ॥ निजानंददाटनि
 ॥ भेट तयासी ॥ समाधिस्थ तो वर्तता दे हे गे
 ॥ ही ॥ तया देहना ही ल्पणे वेद पा ही ॥ ५१ ॥ रमे
 ॥ चित्त ज्या चें सदाराम रूपी ॥ तया सांडिले मो
 ॥ हमाया विकल्पी ॥ बुडे ना कदां घोर संसार
 ॥ कूपी ॥ स्वयं जाणिजे तो चि पै राम रूपी ॥ ५२ ॥
 ॥ जया चामहा शोक बोधे निमाला ॥ समाधी
 ॥ सितो मानवी धाम जाला ॥ श्रुती बोलती
 ॥ राम हे नाम त्याला ॥ नमस्कार माझा तया
 ॥ योगिया ला ॥ ५३ ॥ निजांगना शांति रमा
 ॥ जया ची ॥ सत्युत्र हा बोधनिका विरंची ॥
 ॥ वैकुंठ हे धाम समस्त ज्यानें ॥ ते रूप माझ्या
 ॥ गुरु माधवा ने ॥ ५४ ॥ सांड निमाया गुर
 ॥ वैभवा ते ॥ जे छे दिती पूर्ण भवो द्वा ते ॥ आ
 ॥ राधिती शास्त्र मुखे भवा ते ॥ ते ने ण तीया
 ॥ भव संभवा ते ॥ ५५ ॥ क्रिया सर्व सांडनियां
 ॥ वैभवा ची ॥ पाहा अंतरी मूर्ति डोळीं शिवा
 ॥ ची ॥ घडे तडुले शांति वेगी भवा ची ॥ वेदया
 ॥ परी भारती केशवा ची ॥ ५६ ॥ नहे जागु
 ॥ रूदेह धारी स्वभावे ॥ ल्पणे त्यासि जो दे
 ॥ हसंगे भजावे ॥ तया चें गम थोर आश्वी
 ॥ य आळा ॥ कसी उंडणी ते चढे व्योमधा
 ॥ मा ॥ ५७ ॥ हरी चित्तने बंधने शून्य जाली ॥
 ॥ हरी दर्शने साधने ती निमाली ॥ हरी भेट
 ॥ लामो क्षमो क्षासि जाला ॥ हरी आकळे

॥ हे क के व म त्या ला ॥ ५६ ॥ त्दय कमळ
 ॥ साचें वेधिलें काम विंचें ॥ ल्पण्युनिमनत
 ॥ झंत मजालें प्रपंचें ॥ आसुनितरि मुढोरसा
 ॥ धने पाय सेंवी ॥ परमसितकहो सीसूरसी
 ॥ याचि देही ॥ ५९ ॥ निष्कामता ज्यासि प्रसेन
 ॥ जाली ॥ त्याच्या घराधा उनिशांति आली ॥
 ॥ पाई सदागंठिसमाधिघाली ॥ सायुज्य
 ॥ ताही चरणीनिवाली ॥ ६० ॥ महलोकह
 ॥ र्त्तानिजानंदकर्ता ॥ जगद्गोळधर्तारमादेवि
 ॥ भर्ता ॥ जपेनामत्याचें तया जन्मकेंचें ॥ अ
 ॥ सें वाक्य साचें कवीकेशवाचें ॥ ६१ ॥ दृष्टी
 ॥ सभासे जगदीश ज्यासी ॥ संसारजा
 ॥ लानभपुष्पत्यासी ॥ तत्त्वार्थ एसा अ
 ॥ तिवाक्यबाले ॥ हें ऐकतां सज्जन वंदडोले ॥
 ॥ ६२ ॥ माया आहे हा मूढाकाचवाह ॥ सं
 ॥ सारें तो बांधला व्यर्थ पाहें ॥ मायानां ही
 ॥ निश्रयो पूर्ण ज्याचा ॥ निर्धारें सीत्यास
 ॥ संसारकेंचो ॥ ६३ ॥ पळे कामघऊनि
 ॥ क्रोधासि पाहीं ॥ नुरेठा वशो कादिहे
 ॥ षासिकां हीं ॥ विरचित्तसंपूर्ण हें संत
 ॥ पाई ॥ तई सांपडे राघवभ्रांतिनाही ॥ ६४
 ॥ नाही तुंली आत्मवीचारेकेला ॥ वृथा
 ॥ चिहापावने देहगला ॥ आतां तुंलीस
 ॥ ज्जनसंगसाधा ॥ निरंतरिं ब्रह्मपदीच
 ॥ नादा ॥ ६५ ॥ धांवो नियांसंत गृहासिये
 ॥ सी ॥ सांडुनि मायागुणसंगेदसी ॥ सि
 ॥ ध्यांत सारें मृतपूर्णघेसी ॥ कवीत्पणे
 ॥ ब्रह्मजितांचि होसी ॥ ६६ ॥ दरिद्रें
 ॥ जह्नी व्यापिलें योगियासी ॥ तह्नी नाठ

॥ वेदैन्यवार्तातयासी ॥ सुखात्माहरीअं
 ॥ तंरीजोडलासे ॥ सुषुप्तीपरीद्वयत्यांत
 ॥ नभासे ॥ ६७ ॥ हृदयपंकजिराघवभेट
 ॥ ला ॥ सकळपातकसागरआटला ॥ भु
 ॥ वभयांतकअंतरिदाटला ॥ निजसुरेव
 ॥ नयनीपुरलोडला ॥ ६८ ॥ नकोवाढउ
 ॥ कल्पनेचापसारा ॥ नकोसर्वथाआठ
 ॥ उपुत्रदारा ॥ नकोमानसीदेउद्वैतासि
 ॥ थारा ॥ नकोवीसरोरामरायाउदारा ॥
 ॥ ६९ ॥ सत्संगतीवांचुनिमोक्षजोडे ॥ शु
 ॥ कादियोगीतरिकायवेडे ॥ अहतिरिीं
 ॥ संतसुखाब्धिडेही ॥ कलासुखेंकेव
 ॥ ळवासतेही ॥ ७० ॥ घडेमोक्षयासदु
 ॥ रुवाक्यमात्रं ॥ यद्यथासदागर्जतीस
 ॥ वशास्त्रे ॥ श्रुतीबेळतीहाचिसिधांत
 ॥ पांही ॥ गुरुवेगळासर्वथामोक्षनाही ॥
 ॥ ७१ ॥ श्रुकादीकयोगीजगद्व्यपाही ॥
 ॥ गुरुवेगळात्यांसिहीमोक्षनांही ॥ ल
 ॥ णानीधरासदुरुपायमाथां ॥ जनी
 ॥ वर्ततांमोक्षपौवालआतां ॥ ७२ ॥ विष
 ॥ यरतिहरीनातत्ववार्ताकरीना ॥ क्षणभ
 ॥ रिमनमाझेसंगत्याचाकरीना ॥ हरुनि
 ॥ सकळचीतानित्यचीतीअनंता ॥ चरण
 ॥ धरिनमाथांपूर्णत्याचेचिआतां ॥ ७३ ॥
 ॥ पतितपावनतागुरुजोडला ॥ भवभया
 ॥ नकहातरुमोडला ॥ परममंगळतंपद
 ॥ साधलं ॥ सुखरमापतिचेंमजलाधलं
 ॥ ७४ ॥ कमळलोचनराघवभेटला ॥

॥ सकळ पातक सागर आटला ॥ भव
 ॥ भयांत कअंतरिंदाटला ॥ निज करवें न
 ॥ यनी पुर लोटला ॥ ७५ ॥ रवी प्रहीं दि
 ॥ विके विं विराजे ॥ सधार्णवा गो स्थिर ह
 ॥ सिराजे ॥ तैसे निजानंद कवी द्रसाधू ॥
 ॥ तया पुढे हा मति न ल्यवाट ॥ ७६ ॥ सा
 ॥ धूप दीठ उनियां मुनाकी ॥ जै पवले जा
 ॥ नुकि जीव नाकी ॥ कैसे निते इच्छि ति वा
 ॥ सनाकी ॥ नाही तयाला गुनिवासना
 ॥ कीं ॥ ७७ ॥ सकाम जे याग करूनि गेले
 ॥ आहाच ते नाक धरुनि ठेले ॥ पुण्य सुइते
 ॥ थुनि पात जाला ॥ निनीकता प्राप्ति सवें
 ॥ चित्याला ॥ ७८ ॥ मोक्षादुनी गो उपदार्थ
 ॥ काही ॥ जगत्रया मानिक दापि नाही ॥ हे
 ॥ यादिका लागिके चवनाकी ॥ याकार
 ॥ णे इच्छि ति वासनाकी ॥ ७९ ॥ योगें योगें ते
 ॥ ल्मणे नाक जोडे ॥ निनीकी केंवर्तती लोक
 ॥ वेडे ॥ निर्धारें सी संत पादाब्ज वासी ॥ जा
 ॥ लें भावें सर्व दाना कत्यासी ॥ ८० ॥ सत्क
 ॥ मन्व्या साधनी नाक भेटे ॥ मिथ्यावादी
 ॥ गर्जती लोक खोटे ॥ साधू संगें चित्त
 ॥ ज्याचें निवालें ॥ त्याच्या हातानाक संपू
 ॥ णे आलें ॥ ८१ ॥ मायार्णवी शोक हस्तुनि ता
 ॥ री ॥ निजात्मता देउनि जन्म तारी ॥ तो अं
 ॥ तरी सद्गुरु मोक्षदाता ॥ नमू मृषा भेद ल्य
 ॥ जूनि आतां ॥ ८२ ॥ साधू सुखे इश्वर पू
 ॥ णे जोडे ॥ उपाय हा नेणतिलोक वेडे ॥ उदा
 ॥ सते आत्म करवा सिजाणा ॥ याकारेण पा

॥ वतिजन्मना ना ॥ ६३ ॥ नित्यानंदानि
 ॥ कृष्णपूष्णरूपा ॥ स्वयंबोधासद्गुरुना
 ॥ थदीपा ॥ तस्यासंगेचित्स्वरेंतुप्रैस्वा
 ॥ मी ॥ यालांगीहेंदिलेपायआली ॥ ६४ ॥
 ॥ शक्यासेवंमौनकदानमोडे ॥ विलोकि
 ॥ तांभेदसमस्तमोडे ॥ ऐसीदयापूर्ण
 ॥ जयासिजोडे ॥ आत्माचितेनेणति
 ॥ लोकेवेडे ॥ ६५ ॥ वर्णाश्रमीघोरवि
 ॥ कारधम ॥ असोनिजेनादतिपूर्ण
 ॥ ब्रह्मी ॥ जितांचितेकेवळमुक्तपाही ॥
 ॥ ब्रह्मातयाभेदकदापिनाही ॥ ६६ ॥
 ॥ आलेजरीसज्जनदेहगांवा ॥ घेती
 ॥ तद्दीब्रह्मपुदीविसावा ॥ याकारणे
 ॥ ईश्वरतेविपाही ॥ असोनिहादेहत
 ॥ यासिनाही ॥ ६७ ॥ साधूसजोमान
 ॥ वरूपपोहे ॥ श्रुतील्लेणेदानवतोवि
 ॥ आहे ॥ भोगीभवीगौरवशोकबुद्धी ॥
 ॥ नेणेकदाअक्षयमेक्षसिद्धी ॥ ६८ ॥
 ॥ पुदांबुजेराजसराघवांची ॥ श्रुती
 ॥ ल्लेणेअंतकयाभवांची ॥ विलोकि
 ॥ तांशोकसमुद्रआटे ॥ निरतरीमा
 ॥ नुसिसौरव्यदाटे ॥ ६९ ॥ सौरव्यकि
 ॥ तीगुल्यजनांतबोले ॥ चित्तनिया
 ॥ राममनांतडोले ॥ डोलासेवंसौरव्य
 ॥ अपारआहे ॥ तेसेवित्ताडोलनिवा
 ॥ तशहे ॥ ७० ॥ निरंजनीकेवळयोग
 ॥ ज्याचा ॥ मायार्णवीतारकसंगत्याचा ॥
 ॥ गुल्यार्थहाआगमराजबोले ॥ लेणे
 ॥ स्वरेंसुतसुभाचिडोले ॥ ७१ ॥
 ॥ जेलेववीलेसनकादिकांसी ॥
 ॥ जेलेववीलेजनकाशुकासी ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com